ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

ओशो संन्यासियों के शिक्षा एवं व्यवसाय का समाजशास्त्रीय अध्ययन

{रायपुर (छ.ग.) नगर के ओशो ध्यान केन्द्र गुढ़ियारी के विशेष संदर्भ में}

डॉ. स्नेह कुमार मेश्राम सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र विभाग भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

snehmeshram@gmail.com

शोध संक्षेपिका :–

बीसवीं सदी के विश्वविख्यात आध्यात्मिक गुरु ओशो के अनुसार कल्याणकारी समाज के निर्माण हेतु शिक्षा तंत्र में परिवर्तन करते हुए आध्यात्मिक शिक्षा को भी अन्य विषयों के साथ जोड़ते हुए शिक्षा का केन्द्र महत्वकांक्षा नहीं बल्कि मानवता, करुणा–प्रेम, पारस्परिक सहयोग–सद्भाव बनाना होगा। व्यवसाय का सीधा सबंध व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति से होता है। हिन्दुओं में तो चार पुरुषार्थों में अर्थ को द्वितीय महत्वपूर्ण स्थान पर रखा गया है। यही वह पुरुषार्थ है जिस पर सबसे महत्वपूर्ण पुरुषार्थ धर्म आधारित है, अर्थात इसके अभाव में धर्म की प्राप्ति भी कठिन है। अपने व्यवसाय से अर्जित अर्थ से व्यक्ति अपनी तमाम आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और उपेक्षाओं से बचा रहता है। दवे (1996) ने अपने अध्ययन मे तीन प्रकार की उपेक्षाओं की चर्चा की है– 1. शारीरिक उपक्षा, 2. आर्थिक उपक्षा और 3. संवगोत्मक उपक्षा।

ओशो संन्यासियों की शैक्षणिक व व्यवसायिक पृष्ठभूमि का समाजशास्त्रीय अध्ययन नामक उपरोक्त लघु शोध हेतु उद्देश्य; 1.ओशो संन्यासियों की शैक्षणिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना तथा 2.ओशो संन्यासियों की व्यवसायिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना निर्धारण किया गया। अध्ययन हेतु उपकल्पना; 1.ओशो देशना के अनुसार ओशो संन्यासियों की शैक्षणिक स्थिति उत्तम है तथा ओशो देशना के अनुसार ओशो संन्यासी व्यवसायिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हैं, का निर्माण किया गया। उपरोक्त अध्ययन अन्वेषणात्मक शोध–प्रारुप के अर्न्तगत किया गया है।

अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ के भिलाई–3 नगर के (जिला; दुर्ग, छ.ग.) के 100 ओशो संन्यासियों में से 40 ओशो संन्यासियों का चुनाव दैव निदर्शन के अर्न्तगत लॉटरी प्रणाली द्वारा किया गया तथा साक्षात्कार अनुसूची द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है साथ ही प्राप्त तथ्यों के आधार पर विश्लेषण किया गया है। अध्ययन पश्चात निष्कर्ष सामने आए कि ओशो संन्यासियों की शैक्षणिक स्थिति उत्तम है व ओशो संन्यासी व्यवसायिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हैं, तथा उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी है। अतः दोनो उपकल्पनाएं सहीं सिद्ध हुईं।

शोध पत्र :–

प्रस्तावना :–

बीसवीं सदी के विश्व विख्यात संबुद्ध आध्यात्मिक गुरू 'ओशो' के अनुसार उन्हे 21 मार्च 1953 को उन्हें 'आत्मज्ञान' या बुद्धत्व उपलब्ध हुआ। इसी 'आत्मज्ञान' या बुद्धत्व की प्राप्ति हेतु संपूर्ण मानव जाति को प्रेरित करने एवं अपने जीवन जागृति आन्दोलन को प्रगाढ और विस्तृत रूप देने के लिए अपने साधकों के निवेदन पर **ओशो ने 26 सितम्बर 1970 को 'मनाली' में आयोजित साधना शिविर में 'नव–सन्यास' आन्दोलन का सूत्रपात किया एवं प्रथम 16 साधकों की दीक्षित किया।** यह 'नव–सन्यास' आन्दोलन पूरे विश्व में फैलकर लाखों सत्य के खोजियों के संपूर्ण जीवन को रूपान्तरित कर देने वाला था। ओशो के अनुसार ''संन्यास एक संकल्प है कि मै जीवन सत्य की खोज करूंगा, कि मैं संसार तक ही नहीं रूकूंगा, परमात्मा तक पहुंचुंगा।'' ओशो के अनुसार ''संन्यास पलायन नहीं है यह जीवन को इसकी संपूर्ण समग्रता व प्रचुरता में जीना है। यह जीवन को इसके सभी आयामों में जीने की कला है।'' यहीं ओशो के नव–संन्यास व पारंपरिक संन्यास में भेद है, ओशो के अनुसार – ''संसार से पलायन नहीं कर लेना है बल्कि संसार में रहकर जीवन की समस्त चुनौतियों व संघर्षों को अंगीकार करते हुए 'जीवन–सत्य' तक पहुंचना है।''

ओशो की लगभग 700 से अधिक किताबें विश्व की कई भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 7000 घंटे के ऑडियो व 1700 घंटे के विडियो प्रवचन रिकार्ड किए गए हैं। ओशो का नव संन्यास आंदोलन आज भी संपूर्ण विश्व मे

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

तेजी से फैल रहा है तथा संन्यासियों द्वारा विश्व भर में ध्यान केंद्रों व ध्यान शिविरों का संचालन हो रहा है। छत्तीसगढ़ राज्य में भी ओशो नव संन्यास आंदोलन का प्रसार हुआ है तथा राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में संन्यासियों द्वारा ध्यान केंद्रों व ध्यान शिविरों के माध्यम से समाज में ध्यान साधना एवं आध्यात्मिक पुर्नजागरण का भगीरथ प्रयास हो रहा है।

ओशो संन्यासी चूंकि गृहस्थ संन्यासी हैं उन्हें आत्मनिर्भर होकर अपने परिवार का भरण–पोषण करना है एवं संसार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना है इसलिए वे अच्छी से अच्छी शिक्षा अपने स्वभाव के अनुरुप प्राप्त करना चाहते हैं। ओशो स्वयं बहुत अधिक सुशिक्षित एवं घोर अध्यावसायी थे साथ–साथ कला, विज्ञान, व्यवसाय आदि क्षेत्रों में नये आयाम रचने हेतु प्रेरित करते थे। ओशो संन्यासी ओशो देशना के अनुसार बच्चों को उनकी स्ववभाविक प्रकृति एवं रुझान के अनुरुप शिक्षा में विषयों एवं क्षेत्रों के चुनाव में सहयोग एवं प्रेरित करते हैं। ओशो संन्यासी अपने बच्चों को परंपराएँ, मान्यताएँ, मतवाद, पूजा–पाठ इत्यादि न सिखाकर केवल ध्यान साधना हेतु प्रेरित करते हैं।

ओशो ध्यान केन्द्र गुढ़ियारी रायपुर छत्तीसगढ़ का एक अग्रणी ध्यान केन्द्र है, जहां ओशो से संबंधित समस्त ध्यान प्रयोगो, शिविरों तथा अन्य गतिविधियों का विधिवत आयोजन किया जाता है। 20 एकड़ में फैला यह ओशो आश्रम सर्वसुविधायुक्त तथा आध्यात्मिक विकास हेतु एक उत्तम स्थल प्रतीत होता है।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन :–

शर्मा चन्द्रधर (1998) ने अपने अध्ययन में भारतीय धर्मों एवं उनसे संबंधित संन्यासियों के अपने अध्ययन में बताया कि हिन्दु, जैन एवं बौद्ध धर्म से संबंधित संन्यासी किसी भी व्यवसाय में नहीं लगे होते हैं एवं भोजन, वस्त्र आदि हेतु समाज पर निर्भर होते हैं अथवा धार्मिक अनुष्ठानो के आयोजन के बदले मिलने वाली दान–दक्षिणा पर निर्भर हैं।

गोस्वामी भानुप्रताप (2005) ने अपने अध्ययन में सन्त कबीर के संपूर्ण जीवन, साधना पद्यति, कबीर पंथियों का वर्णन, विश्लेषण किया गया है। सन्त कबीर द्वारा परमात्मा एंव आत्मज्ञान प्राप्ति के मार्ग – प्रेम, योग, धर्म की साधना तथा कबीर पंथियो द्वारा इन देशनाओं के पालन व जनसामान्य के जेहन पर कबीरदास जी की अमिट छवि के कारणो को स्पष्ट किया गया है। कबीरदास जी के अनुसार सद्गुरु के सत्संग मात्र से ही शिष्य परममुक्ति की ओर गतिमान होने लगता है। इसलिए कबीरपंथ में सद्गुरु के सत्संग का अत्यधिक महत्व है।

चंद्राकर संजय (2006) ने अपने अध्ययन में छत्तीसगढ़ के सन्त स्वामी आत्मानन्द जी के समाज–कल्याण के कार्यो से समाज मे आये परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है। 5 अक्टूबर 1929 को ग्राम–कपसदा, जिला–रायपुर में जन्मे रामकृष्ण परमहंस की धारा के संन्यासी, सन्त स्वामी आत्मानन्द जी ने रायपुर, बिलासपुर, नारायणपुर, अमरकंटक एंव भिलाई मे शिक्षा, स्वास्थ एंव समाज सुधार से सबंधित कई केंद्र स्थापित किए जिससे छत्तीसगढ़ के समाज को अत्यंत लाभ प्राप्त हुआ तथा अनेकों का जीवन रुपांतरित हुआ।

ओ–ब्रायन पाउला (2008) ने अपने अध्ययन में जोस्को पेटकोविक के निर्देशन में आष्ट्रेलिया के दक्षिण–पश्चिमी शहर फ्रेमाण्टले मे ओशो सन्यासियों के समुदाय, उनकी जीवनचर्या व गतिविधियों तथा साधना का वृहद विश्लेषण प्रस्तुत किया। साथ ही ओशो के संम्पूर्ण जीवन अभियान पर भी शोधार्थी ने विस्तार से प्रकाश डाला। शोधार्थी ने फ्रेमाण्टले के ओशो संन्यासियों के समुदाय का शहर के जनमानस पर पड़ने वाले प्रभाव का भी अध्ययन किया तथा यह जानने का भी का प्रयास किया कि संन्यासी किन परिस्थितियों के माध्यम से ओशो एवं नव संन्यास आन्दोलन की ओर उन्मुख हुए।

अलरेजा हरनाम सिंह (2012) ने अपने अध्ययन में ओशो द्वारा नई मनुष्यता हेतु दी गई अवधारणा 'जोरबा दि बुद्धा' का विश्लेषण किया गया है। ओशो के अनुसार मनुष्य को जोरबा दि ग्रीक उपन्यास के पात्र जोरबा की तरह भौतिक जीवन का संपूर्ण आनंद लेने के साथ ही साथ गौतम बुद्ध की तरह चेतना की परमस्थिति को प्राप्त करने हेतु प्रगतिमान होना चाहिए। 'जोरबा दि बुद्धा' अर्थात भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनो रुप से सम्पन्न मनुष्य! ओशो अपने नव संन्यास आंदोलन के माध्यम से समाज को एक साथ भौतिक एवं आध्यात्मिक रुप से समृद्ध करने हेतु प्रयासरत रहने की शिक्षा दे रहे थे।

डुआंगचाई फ्रा सोरावित (2015) ने अपने अध्ययन में वी. पी. बन्सोड़ के निर्देशन में थाईलैण्ड के बौद्ध संन्यासियों का गहन अध्ययन किया तथा उनकी जीवन शैली, मनोदशा, इच्छाशक्ति, साधना पद्धति, सांस्कृतिक वैशिष्ट्य इत्यादि विषयों

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

पर विस्तीर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया। थाईलैण्ड एक बुद्धिस्ट देश है तथा यहॉ सर्वाधिक संख्या में बौद्ध संन्यासी निवासरत हैं एवं उन्हे यहॉ की सरकार द्वारा विशेष संरक्षण प्राप्त होता है। शोधार्थी ने बौद्ध संन्यासियों की मानसिक एवं भावनात्मक शक्ति तथा बुद्धिमत्ता के साथ उनकी 'स्व' की अवधारण पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है।

विषय का समाजशास्त्रीय महत्व :–

चीनी सतं कनफ्यूशस ने कहा था, "अज्ञानता एक ऐसी रात्रि के समान है जिसमें न चाँद हैं न तारे।" शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान रूपी प्रकाश को प्राप्त कर अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करना है। शिक्षा के अभाव में ज्ञान और विज्ञान दोनों का अभाव होगा। महात्मा गांधी कहते हैं कि "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बच्चे के शरीर, मन और आत्मा में विद्यमान सर्वोत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास करना है।" शिक्षा से व्यक्ति में एक तरफ जहाँ नवोन्मेषों के प्रति जागरूकता पैदा होती है, वहीं दूसरी ओर वैचारिक दृढ़ता, प्रखर चिन्तन, परिपक्वता, बुद्धिमता इत्यादि गुणों का समावेश भी होता है।

जीविकोपार्जन हेतु आर्थिक क्रियाओं का संपादन आवश्यक होता है। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन निर्वहन हेतु कुछ न कुछ कार्य कर अर्थ अर्जन करना पड़ता है। भारत में संन्यासी सांसारिक जीवन से विरक्त रहकर साधना करते रहे हैं उनके भरण–पोषण की जिम्मेदारी समाज उठाता है ओशो इस निर्भरता को अनुचित मानते हैं अतः ओशो अपने संन्यासियों को आत्मनिर्भर रहकर संपूर्ण पारिवारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करने की शिक्षा देते थे अतः ओशो संन्यासी किसी न किसी व्यवसाय से जुड़े हुए हैं।

वर्तमान समय में मानव समाज ने धन, पद, प्रतिष्ठा की अंधी दौड़ व गलाघोंट प्रतियोगिता को समाज में केंन्द्रीय मूल्य के रूप में स्थापित कर दिया है तथा मानवीय मूल्यों प्रेम, करूणा, बंधुत्व तथा परम मूल्य–जीवन सत्य की खोज, स्वयं के अस्तित्वगत सत्य का अन्वेषण, ईश्वर की खोज, आत्मज्ञान एवं मोक्ष केवल किताबी बातें बनकर रह गई है। ओशो के अनुसार; धन–पद–प्रतिष्ठा की अंधी दौड़ व गलाघोंट प्रतियोगिता वास्तव में अपने अन्दर की रिक्तता, सारहीनता व अर्थहीनता को भरने का व्यक्ति के अहंकार का प्रयास है जो बुनियादी रूप से गलत है व्यक्ति जीवन भर धन–पद–प्रतिष्ठा के पीछे अपना जीवन नष्ट करता है और पहुंचता मृत्यु के अतिरिक्त और कहीं भी नहीं है और अहंकार ही आत्मज्ञान की प्राप्ति में सबसे बड़ा बाधक है।

ओशो के अनुसार समाज, वास्तविक अर्थो में मनुष्य के लिए तभी कल्याणकारी सिद्ध होगा जब सभी वर्ग–भेद, जाति–भेद, राष्ट्र व धर्म भेद विलीन हो जाए तथा पूरी पृथ्वी एक मानवीय ईकाई की तरह रहे और मनुष्य के भीतर छिपी हुई प्रतिभा को निखारने में उसकी हर संभव मदद करे ऊंच–नीच की सारी विभाजनकारी रेखाएं मिट जाएं एक समृद्ध मानवीय समाज में एक इंजीनियर तथा एक कारपेंटर को समान सम्मान व सुविधाएं प्राप्त हो क्योंकि दोनों ही अपनी प्रतिभा से समाज को समृद्ध करने में योगदान कर रहे है। तथा दोनों में से किसी के भी योगदान को कमतर नहीं आंका जाना चाहिए। समाज मनुष्यों को अपने अस्तित्वगत सत्य की खोज हेतु प्रेरित करे तथा सहायता प्रदान करे। ओशो के अनुसार व्यक्ति को किसी विशिष्ट धार्मिक संप्रदाय से बंधे रहने और अनुयायी होने की भी कोई आवश्यकता नहीं है, ओशो के अनुसार जिस तरह विज्ञान किसी संप्रदाय विशेष से न जुड़ा होकर सारी मानवता के लिए सर्व–सुलभ है उसी प्रकार धर्म भी किन्हीं विशिष्ट संप्रदायों में बंटा न होकर सारी मानवता हेतु सर्वसुलभ बनाया जाना चाहिए।

उद्देश्य :–

अध्ययन की प्रकृति के अनुरुप नि.लि. उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं –

1. ओशो संन्यासियों की शैक्षणिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. ओशो संन्यासियों की व्यवसायिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

उपकल्पना :–

अध्ययन की प्रकृति के अनुरुप नि.लि. उपकल्पनाएं निर्धारित की गई हैं –

1. ओशो देशना के अनुसार ओशो संन्यासियों की शैक्षणिक स्थिति उत्तम है।

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

2. ओशो देशना के अनुसार ओशो संन्यासी व्यवसायिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हैं।

अनुसंधान पद्धतिः–

उपरोक्त अध्ययन अन्वेषणात्मक शोध–प्रारुप के अर्न्तगत किया गया है। अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ के रायपुर नगर के ओशो ध्यान केन्द्र गुढ़ियारी के 100 ओशो संन्यासियों में से 40 ओशो संन्यासियों का चुनाव दैव निदर्शन के अर्न्तगत लॉटरी प्रणाली द्वारा किया गया तथा साक्षात्कार अनुसूची द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है साथ ही प्राप्त तथ्यों के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

तथ्य संकलन एवं विश्लेषण :–

तथ्य संकलन हेतु छत्तीसगढ़ के रायपुर नगर के ओशो ध्यान केन्द्र गुढ़ियारी के 100 ओशो संन्यासियों में से 40 ओशो संन्यासियों का चुनाव दैव निदर्शन से लॉटरी प्रणाली द्वारा किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है। ओशो संन्यासियों की शैक्षणिक व व्यवसायिक पृष्ठभूमि का समाजशास्त्रीय अध्ययन से प्राप्त महत्वपूर्ण रुझान इस प्रकार रहे :–

शिक्षित ओशो संन्यासी :–

साक्षात्कार अनुसूची द्वारा एकत्रित तथ्यों के विश्लेषण से ओशो संन्यासियों के शिक्षा के संबंध में रुझान इस प्रकार प्राप्त हुए :–

क्र.	मत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	40	100%
2	नहीं	0	0

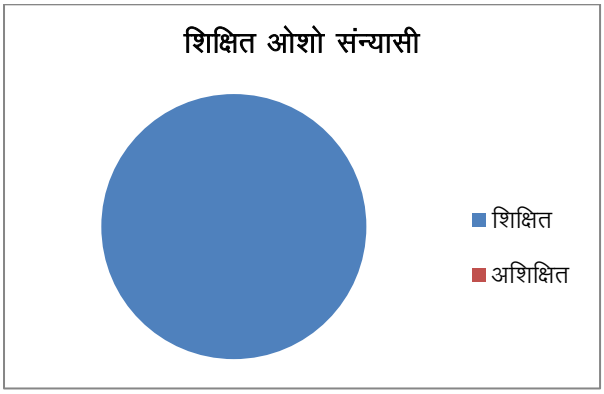

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि ओशो ध्यान केन्द्र गुढ़ियारी से संबंधित समस्त संन्यासी शिक्षित हैं। यह एक उत्तम स्थिति है चुंकि अधिकांश संन्यास धाराओं से संबंधित संन्यासियों में शिक्षित संन्यासियों की संख्या कम है।

ओशो संन्यासियों में शिक्षा का स्तर :–

साक्षात्कार अनुसूची द्वारा एकत्रित तथ्यों के विश्लेषण से ओशो संन्यासियों के शिक्षा के संबंध में रुझान इस प्रकार प्राप्त हुए :–

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

क्र.	शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	स्नातकोत्तर	30	75.00
2.	स्नातक	10	25.00
3.	12वी	0	0
4.	10वी	0	0
5.	अशिक्षित	0	0
	योग –	**40**	**100.00**

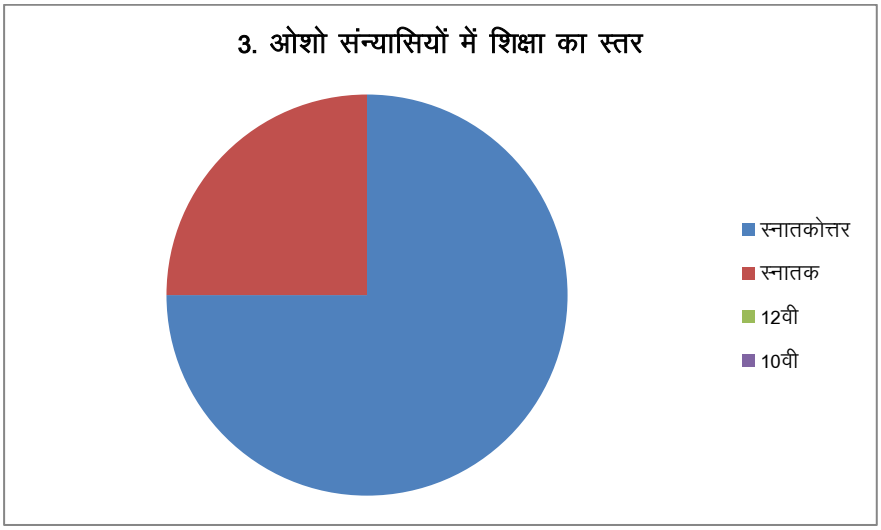

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि ओशो ध्यान केन्द्र गुढ़ियारी से संबंधित संन्यासी सुशिक्षित हैं। 75 प्रतिशत संन्यासियों ने स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा तथा 25 प्रतिशत संन्यासियों ने स्नातक स्तर की शिक्षा ग्रहण की है। ओशो संन्यासियों का शिक्षा के प्रति झुकाव आध्यात्मिक साधकों हेतु अनुकरणीय है।

ओशो संन्यासियों के बच्चों की औपचारिक शिक्षा के प्रमुख साधन :–

साक्षात्कार अनुसूची द्वारा एकत्रित तथ्यों के विश्लेषण से ओशो संन्यासियों के बच्चों की औपचारिक शिक्षा के संबंध में प्राप्त रुझान इस प्रकार हैं।

क्र.	औपचारिक शिक्षा के प्रमुख साधन	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	स्कूल	0	0
2.	कॉलेज	0	0
3.	उपरोक्त दोनो	23	57.50
4.	कोचिंग संस्थान	0	0
5.	उपरोक्त सभी	17	42.50
	योग –	**40**	**100.00**

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

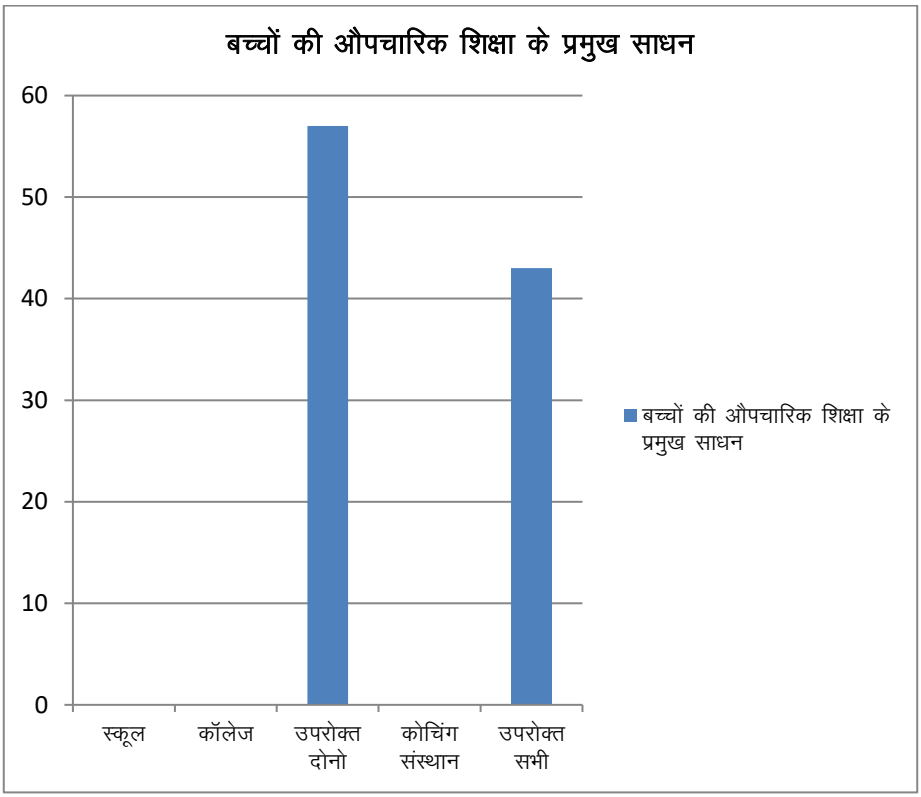

ओशो संन्यासियों के बच्चों की अनौपचारिक शिक्षा के प्रमुख साधन :–

क्र.	अनौपचारिक शिक्षा के प्रमुख साधन	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	परिवार	03	07.50
2.	आस–पड़ौस	0	0
3.	ध्यान केन्द्र	07	17.50
4.	ओशो देशना	0	0
5.	उपरोक्त सभी	30	75.00
	योग –	**40**	**100.00**

ओशो संन्यासियों के बच्चों की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु प्रमुख साधन :–

क्र.	प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु प्रमुख साधन	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	कोचिंग संस्थान	0	0
2.	स्वाध्याय	10	25.00
3.	इन्टरनेट	0	0
4.	लाइब्रेरी अध्ययन	08	20.00

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

5.	उपरोक्त सभी	22	55.00
	योग –	**40**	**100.00**

ओशो संन्यासियों की व्यवसायिक स्थिति :–

क्र.	व्यवसाय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सरकारी नौकरी	15	37.50
2.	प्राइवेट नौकरी	17	42.50
3.	कृषि	03	07.50
4.	स्वयं का व्यवसाय	05	12.50
	योग –	**70**	**100.00**

ओशो संन्यासियों की आर्थिक स्थिति :–

क्र.	मासिक आय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	10,000 तक	0	0
2.	10,001–20,000 तक	03	07.50
3.	20,001–30,000 तक	20	50.00
4.	30,001–40,000 तक	07	17.50
5.	40,000 से अधिक	10	25.00
	योग –	**40**	**100.00**

ओशो संन्यासियों की पारिवारिक मासिक आय :–

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

क्र.	पारिवारिक मासिक आय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	20,000 तक	03	07.50
2.	20,001–40,000 तक	20	50.00
3.	40,001–60,000 तक	10	25.00
4.	60,001–80,000 तक	0	0
5.	80,000 से अधिक	07	17.50
	योग –	**40**	**100.00**

ओशो नव संन्यास आंदोलन से उत्तरदाता लाभान्वित हुए :–

क्र.	मत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	40	100%
2	नहीं	0	0

निष्कर्ष :–

1. ओशो संन्यासियों की शैक्षणिक स्थिति उत्तम है।
2. ओशो संन्यासी व्यवसायिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हैं, तथा उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी है।

अतः दोनो उपकल्पनाएं सहीं सिद्ध हुईं।

संदर्भ सूची :–

1. प्रसाद चन्द्रनारायण, 1983, *''श्रीमदभगवद्गीता और धम्मपद के नैतिक एवं सामाजिक सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन''*, पं.र.शु. वि.वि. रायपुर
2. मिश्र सरोज कुमार, 1989, *''अघोर मतः सिद्धान्त, साधना व सम्प्रदाय''* , पं.र.शु. वि.वि. रायपुर
3. टिकादार पवित्र मोहन, 1990, *''महाप्रभु चैतन्य के भक्ति दर्शन का समालोचनात्मक अध्ययन''*, पं.र.शु. वि.वि. रायपुर
4. अलरेजा हरनाम सिंह, 1994, *''मानव नियति और स्वातन्त्रय, सांख्य बौद्ध और अद्वैत दर्शन के विशेष संदर्भ में''*, पं.र.शु. वि.वि. रायपुर
5. ठाकुर मन्जुसिंह, 1997, *''मानव स्वरूप और नियतिः आरंभिक हिन्दु और बौद्ध धर्म के संदर्भ में''*, पं.र.शु. वि.वि. रायपुर
6. गुप्ता वैजन्ती, 2001, *''प्रपाति एवं पुष्टि भक्ति का दार्शनिक एवं तुलनात्मक विवेचन''*, पं.र.शु. वि.वि. रायपुर
7. राठौर नन्द कुमार, 2002, *''पंतजलि एवं ओशो के अनुसार योग साधना''*, पं.र.शु. वि.वि. रायपुर
8. मुखर्जी राजीव, 2002, *''सदगुरू विजयकृष्ण गोस्वामी के धार्मिक एवं दार्शनिक विचारों का समलोचनात्मक अध्ययन''*, शास. दुर्गा स्ना. महा. वि. रायपुर

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

9. गोस्वामी भानुप्रताप, 2005, *''कबीर–एक दार्शनिक अनुशीलन''*, पं.र.शु.वि.वि. रायपुर
10. चंद्राकर संजय, 2006, *''छत्तीसगढ़ में सामाजिक परिवर्तन– एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (स्वामी आत्मानन्द के योगदान के विशेष संदर्भ में)''*, पं.र.शु. वि.वि रायपुर
11. मेयर लूसी (द्वारा गुप्ता एम.एल., शर्मा डी.डी., 2014, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, p.314)
12. बोगार्डस (द्वारा गुप्ता एम.एल., शर्मा डी.डी., 2014, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, p.314)
13. जॉनसन (द्वारा गुप्ता एम.एल., शर्मा डी.डी., 2014, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, p.315)
14. रिवर्स डबल्यू. एच. आर. (द्वारा गुप्ता एम.एल., शर्मा डी.डी., 2014, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, p.315)
15. ओशो, 1991, *''ज्यों की त्यों धर दिन्ही चदरिया''*, रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. पूणे
16. मेहता श्याम, 2014, *''इंडियन मैरिज''*, पेंग्विन बुक्स इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, pp.54-69
17. मेहता श्याम, 2014, Op.Cit., pp.90-98
18. दूबे श्यामाचरण, 1955, *"Man & Culture"*, पेंग्विन बुक्स इंडिया लिमिटेड, p.20
19. ओशो, 1988, *''पद घुंघरू बांध''*, रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. पूणे, p.157
20. कर्वे इरावती, 1953, *"Kinship Organization in India"*, एशिया पब्लिशिंग हाडस मुंबई, p.56
21. देसाई आई. पी., 1956, *"Some Aspects at Family in Mahuva"*, एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, p.97
22. कपाड़िया के.एम., 1966, *"Marriage & Family in India"*, Oxford University Press, London, pp.26-32
23. श्रीनिवास एम.एन., 1942, *"Marriage & Family in Mysore"*, न्यू बुक कंपनी, मुंबई
24. ओशो, 2005, *''का सोवे दिन रैन''*, रेबल पब्लिशिंग प्रा. लि. पूणे, pp. 64-78
25. ओशो, 1994, *''भज गोविंदम मूढ़मते''*, रेबल पब्लिशिंग प्रा. लि. पूणे, pp. 112-120
26. ओशो, 2002, *''हंसा तो मोती चुगै''*, रेबल पब्लिशिंग प्रा. लि. पूणे, pp. 36-56
27. ओशो, 1988, *''काहे होत अधीर''*, रेबल पब्लिशिंग प्रा. लि. पूणे, pp. 167-182
28. ओशो, 1997, *''अमृत की दिशा''*, रेबल पब्लिशिंग प्रा. लि. पूणे, pp. 45-76
29. ओशो, 2001 *''उत्सव आमार जाति आनंद आमार गोत्र''*, रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. पूणे, pp. 153-165
30. ओशो, 1996, *''व्यस्त जीवन में ईश्वर की खोज''*, रेबल पब्लिशिंग हाऊस प्रा.लि. पूणे, pp.222-230

Copyright @ 2023 Author